

MPSE 004

SOCIAL AND POLITICAL THOUGHT IN MODERN INDIA

LIVE REVISION CLASS 02

MUST WATCH VIDEO BEFORE EXAM

द्रविड़ आंदोलन के उदय में ई. वी. रामास्वामी नायकर के योगदान पर चर्चा कीजिए।

Discuss E. V. Ramaswamy Naicker's contribution to the rise of Dravidian movement.

- **Opposition to Caste System**

E.V. Ramaswamy Naicker, popularly known as Periyar, strongly opposed the caste system, which he believed was discriminatory and harmful to the lower castes, especially the Dalits. He worked to promote equality and social justice by challenging caste-based divisions in society.

जातिवाद व्यवस्था का विरोध

ई. वी. रामास्वामी नायकर, जिन्हें पेरियार के नाम से भी जाना जाता है, ने जातिवाद व्यवस्था का कड़ा विरोध किया, जिसे उन्होंने भेदभावपूर्ण और निचली जातियों, खासकर दलितों के लिए हानिकारक माना। उन्होंने समाज में जाति आधारित विभाजन को चुनौती देकर समानता और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने का काम किया।

- **Promotion of Dravidian Identity**

Periyar believed that the Dravidian people (those in the southern part of India) had a distinct culture, language, and heritage. He encouraged the Dravidians to take pride in their own identity and reject the influence of Aryan culture, which he felt was imposed upon them.

द्रविड़ पहचान का प्रचार

पेरियार ने माना कि द्रविड़ लोग (जो भारत के दक्षिणी हिस्से में रहते हैं) की अपनी अलग संस्कृति, भाषा और धरोहर है। उन्होंने द्रविड़ों को अपनी पहचान पर गर्व करने और आर्य संस्कृति के प्रभाव को नकारने के लिए प्रेरित किया, जिसे उन्होंने उन पर थोपे जाने वाला बताया।

- **Anti-Brahminical Stance**

Periyar was highly critical of the Brahminical system, which he saw as the cause of oppression for non-Brahmin communities, especially the lower castes. He worked to challenge Brahmin dominance in politics, religion, and society, arguing for equal opportunities for all.

ब्राह्मणवाद का विरोध

पेरियार ने ब्राह्मणवादी व्यवस्था की कड़ी आलोचना की, जिसे उन्होंने निचली जातियों, खासकर गैर-

ब्राह्मण समुदायों के उत्पीड़न का कारण माना। उन्होंने राजनीति, धर्म और समाज में ब्राह्मणों के प्रभुत्व को चुनौती दी और सभी के लिए समान अवसरों की बात की।

- **Founder of Self-Respect Movement**

Periyar founded the *Self-Respect Movement* in 1925, which aimed at creating social awareness and empowering the lower castes. The movement emphasized self-respect, education, and social equality. It also encouraged people to reject the traditional authority of priests and religious leaders.

आत्म-सम्मान आंदोलन के संस्थापक

पेरियार ने 1925 में *आत्म-सम्मान आंदोलन* की स्थापना की, जिसका उद्देश्य सामाजिक जागरूकता बढ़ाना और निचली जातियों को सशक्त बनाना था। इस आंदोलन ने आत्म-सम्मान, शिक्षा और सामाजिक समानता पर जोर दिया। साथ ही, इसने लोगों को पुजारियों और धार्मिक नेताओं के पारंपरिक अधिकारों को नकारने के लिए प्रेरित किया।

- **Advocacy for Women's Rights**

Periyar was also a strong advocate for women's rights and worked towards gender equality. He spoke out against practices like child marriage, dowry, and female illiteracy. He promoted the idea that women should have equal rights in society and be free from traditional restrictions.

महिलाओं के अधिकारों का समर्थन

पेरियार महिलाओं के अधिकारों के लिए भी मजबूत समर्थक थे और उन्होंने लिंग समानता की दिशा में काम किया। उन्होंने बाल विवाह, दहेज और महिलाओं की अशिक्षा जैसी प्रथाओं के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने यह विचार फैलाया कि महिलाओं को समाज में समान अधिकार मिलना चाहिए और उन्हें पारंपरिक पाबंदियों से मुक्त होना चाहिए।

- **Opposition to Religious Orthodoxy**

Periyar was highly critical of religious orthodoxy and superstitions, particularly in Hinduism. He advocated for a rational and scientific approach to life and encouraged people to question religious rituals and beliefs that he saw as harmful or illogical.

धार्मिक पाखंड का विरोध

पेरियार धार्मिक पाखंड और अंधविश्वास की कड़ी आलोचना करते थे, खासकर हिंदू धर्म में। उन्होंने जीवन में तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया और लोगों को उन धार्मिक रिवाजों और विश्वासों पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित किया, जिन्हें उन्होंने हानिकारक या निरर्थक माना।

- **Influence on Dravidian Political Parties**

Periyar's ideas influenced the rise of Dravidian political parties like the Dravida Kazhagam (DK) and later the Dravida Munnetra Kazhagam (DMK). His ideas about social justice, equality, and the rejection of Brahminical influence became central to the Dravidian movement and political discourse in Tamil Nadu.

द्रविड़ राजनीतिक दलों पर प्रभाव

पेरियार के विचारों ने द्रविड़ राजनीतिक दलों जैसे द्रविड़ कझागम (डीके) और बाद में द्रविड़ मुनेत्र कझागम (डीएमके) के उदय को प्रभावित किया। सामाजिक न्याय, समानता और ब्राह्मणवादी प्रभाव का

विरोध उनके विचारों का केंद्रीय हिस्सा बन गया और यह विचार तमिलनाडु में द्रविड़ आंदोलन और राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बने।

Evaluate M. K. Gandhi's criticism of Industrialisation and his support for Swadeshi.

महात्मा गांधी की औद्योगिकीकरण की आलोचना और स्वदेशी के लिए उनके समर्थन का मूल्यांकन कीजिए।

• Criticism of Industrialization

Gandhi was critical of industrialization, particularly the large-scale factories that were being set up by the British in India. He believed that these industries exploited workers and caused harm to the environment. He argued that industrialization led to the destruction of traditional, rural industries and made people dependent on machines rather than their own labor.

औद्योगिकीकरण की आलोचना

गांधी औद्योगिकीकरण, विशेष रूप से ब्रिटिशों द्वारा भारत में स्थापित बड़े कारखानों की आलोचना करते थे। उनका मानना था कि ये उद्योग श्रमिकों का शोषण करते थे और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते थे। उन्होंने कहा कि औद्योगिकीकरण ने पारंपरिक ग्रामीण उद्योगों को नष्ट कर दिया और लोगों को अपनी मेहनत की बजाय मशीनों पर निर्भर बना दिया।

• Focus on Rural Development

Gandhi believed that India's strength lay in its villages and rural industries. Instead of focusing on large factories, he advocated for the development of small-scale, cottage industries like handlooms, pottery, and handicrafts. He felt that rural industries would provide employment, preserve traditional skills, and maintain a balance with nature.

ग्रामीण विकास पर ध्यान

गांधी का मानना था कि भारत की ताकत उसके गांवों और ग्रामीण उद्योगों में है। उन्होंने बड़े कारखानों के बजाय छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों जैसे हथकरघा, मटकी और हस्तशिल्प के विकास की वकालत की। उनका मानना था कि ग्रामीण उद्योग रोजगार प्रदान करेंगे, पारंपरिक कौशल को बनाए रखेंगे और प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखेंगे।

• Support for Swadeshi Movement

Gandhi strongly supported the *Swadeshi Movement*, which aimed at boycotting British goods and promoting Indian-made goods. He encouraged people to use products made in India, especially Khadi (hand-spun cloth), as a symbol of self-reliance and resistance to British rule. Gandhi believed that using Swadeshi products would help build India's economy and reduce dependence on foreign goods.

स्वदेशी आंदोलन का समर्थन

गांधी ने *स्वदेशी आंदोलन* का जोरदार समर्थन किया, जिसका उद्देश्य ब्रिटिश सामान का बहिष्कार करना और भारतीय सामान को बढ़ावा देना था। उन्होंने लोगों से भारतीय उत्पादों, विशेष रूप से खादी (हथकरघा कपड़ा), का उपयोग करने की अपील की, जो आत्मनिर्भरता और ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रतिरोध का प्रतीक था। गांधी का मानना था कि स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करने से भारत की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया जा सकता है और विदेशी वस्तुओं पर निर्भरता कम हो सकती है।

• Opposition to Consumerism

Gandhi opposed the consumerist culture promoted by industrialization, which focused on

mass production and over-consumption. He believed that this culture led to the degradation of human values and selfish desires. Instead, he advocated for simple living and high thinking, where people would consume only what they need and live a more self-sufficient life.

उपभोक्तावाद का विरोध

गांधी औद्योगिकीकरण द्वारा प्रचारित उपभोक्तावादी संस्कृति का विरोध करते थे, जो सामूहिक उत्पादन और अत्यधिक उपभोग पर केंद्रित थी। उनका मानना था कि इस संस्कृति से मानव मूल्यों का हास होता है और स्वार्थी इच्छाएं बढ़ती हैं। इसके बजाय, उन्होंने सरल जीवन और उच्च सोच की वकालत की, जिसमें लोग केवल उतना ही उपभोग करें जितना उन्हें आवश्यकता हो और एक आत्मनिर्भर जीवन जीने की कोशिश करें।

• **Emphasis on Decentralization**

Gandhi believed in the decentralization of economic power. He wanted industries to be spread across rural areas rather than concentrated in urban centers. By promoting small-scale industries in villages, Gandhi hoped to prevent the rise of urban unemployment, inequality, and poverty, and ensure that wealth was distributed more evenly.

केन्द्रित नहीं, विकेंद्रीकरण पर जोर

गांधी आर्थिक शक्ति के विकेंद्रीकरण में विश्वास करते थे। वह चाहते थे कि उद्योगों को शहरी केंद्रों के बजाय ग्रामीण क्षेत्रों में फैलाया जाए। गांवों में छोटे-छोटे उद्योगों को बढ़ावा देकर गांधी का उद्देश्य था कि शहरी बेरोजगारी, असमानता और गरीबी बढ़ने से रोका जा सके और संपत्ति का वितरण अधिक समान रूप से हो।

• **Economic Self-Sufficiency**

Gandhi emphasized economic self-sufficiency for India. He believed that if Indians made their own goods and became self-reliant, they could break free from the economic dominance of the British. The use of Swadeshi products, he argued, would not only reduce dependence on foreign imports but also boost local industries and create jobs for the Indian people.

आर्थिक आत्मनिर्भरता

गांधी भारत के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता पर जोर देते थे। उनका मानना था कि अगर भारतीय अपने उत्पाद बनाएं और आत्मनिर्भर बनें, तो वे ब्रिटिशों की आर्थिक प्रभुत्व से मुक्ति पा सकते हैं। उन्होंने कहा कि स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करने से न केवल विदेशी आयात पर निर्भरता कम होगी, बल्कि स्थानीय उद्योगों को भी बढ़ावा मिलेगा और भारतीय लोगों के लिए रोजगार सृजन होगा।

Analyze main features of nationalism as propounded by V. D. Savarkar.

वी .डी. सावरकर द्वारा प्रतिपादित राष्ट्रवाद की मुख्य विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

• **Concept of Hindu Nationalism**

V.D. Savarkar introduced the idea of *Hindu nationalism*, where he believed that India should be a nation for Hindus. According to him, the Hindu identity was deeply rooted in India's history, culture, and civilization. He felt that the Hindu community should unite to protect its cultural values and traditions.

हिंदू राष्ट्रवाद का सिद्धांत

वी. डी. सावरकर ने *हिंदू राष्ट्रवाद* का विचार पेश किया, जिसमें उनका मानना था कि भारत हिंदुओं का राष्ट्र होना चाहिए। उनके अनुसार, हिंदू पहचान भारत के इतिहास, संस्कृति और सभ्यता में गहरे से जुड़ी हुई थी। उन्होंने महसूस किया कि हिंदू समुदाय को अपनी सांस्कृतिक मान्यताओं और परंपराओं की रक्षा करने के लिए एकजुट होना चाहिए।

- **Idea of "Hindutva" (Hinduness)**

Savarkar's main idea was *Hindutva*, which means the essence of being Hindu. It is not just about religion but also about a common culture, language, and territory. He argued that anyone who lives in India, follows its culture, and identifies with its land is part of the Hindu nation, whether they are Hindu, Muslim, or from any other community.

"हिंदुत्व" का विचार

सावरकर का मुख्य विचार था *हिंदुत्व*, जिसका मतलब है हिंदू होने का सार। यह केवल धर्म के बारे में नहीं था, बल्कि एक सामान्य संस्कृति, भाषा, और क्षेत्र के बारे में था। उनका कहना था कि जो कोई भी भारत में रहता है, उसकी संस्कृति को अपनाता है और इस भूमि से जुड़ा हुआ महसूस करता है, वह हिंदू राष्ट्र का हिस्सा है, चाहे वह हिंदू हो, मुसलमान हो या किसी अन्य समुदाय से हो।

- **Opposition to British Colonial Rule**

Savarkar strongly opposed British colonial rule in India. He believed that the British were exploiting India and Hindus must fight for their freedom. He supported the idea of armed struggle and revolution to drive out the British and achieve independence.

ब्रिटिश उपनिवेशी शासन का विरोध

सावरकर ने भारत में ब्रिटिश उपनिवेशी शासन का जोरदार विरोध किया। उनका मानना था कि ब्रिटिश भारत का शोषण कर रहे थे और हिंदुओं को अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना चाहिए। उन्होंने ब्रिटिशों को बाहर निकालने और स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए सशस्त्र संघर्ष और क्रांति के विचार का समर्थन किया।

- **Unity of Hindus**

Savarkar believed in the unity of Hindus. He argued that all Hindus should come together, regardless of their caste or region, to create a powerful and united nation. He wanted to overcome divisions within the Hindu community to build a strong and cohesive nation.

हिंदुओं का एकता

सावरकर हिंदुओं की एकता में विश्वास करते थे। उनका कहना था कि सभी हिंदुओं को अपनी जाति या क्षेत्र से ऊपर उठकर एकजुट होना चाहिए ताकि एक शक्तिशाली और एकजुट राष्ट्र का निर्माण हो सके। वह हिंदू समुदाय के भीतर विभाजन को दूर करना चाहते थे, ताकि एक मजबूत और एकजुट राष्ट्र बनाया जा सके।

- **Cultural Nationalism**

Savarkar promoted *cultural nationalism*, where he emphasized that India's identity should be based on its culture, history, and civilization, rather than Western ideals. He wanted to revive and strengthen India's ancient traditions and values, seeing them as the foundation of the nation's unity.

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

सावरकर ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया, जिसमें उन्होंने जोर दिया कि भारत की पहचान पश्चिमी आदर्शों के बजाय उसकी संस्कृति, इतिहास और सभ्यता पर आधारित होनी चाहिए। वह भारत की प्राचीन परंपराओं और मूल्यों को पुनर्जीवित और मजबूत करना चाहते थे, जिन्हें उन्होंने राष्ट्र की एकता की नींव के रूप में देखा।

• Rejection of the Muslim and Christian Identity

Savarkar was critical of the Muslim and Christian identities in India. He believed that these religions were foreign to India and that they did not contribute to India's cultural heritage. For him, being a true Indian meant identifying with the Hindu way of life.

मुस्लिम और ईसाई पहचान का अस्वीकार

सावरकर ने भारत में मुस्लिम और ईसाई पहचान की आलोचना की। उनका मानना था कि ये धर्म भारत में विदेशी थे और इनका भारत की सांस्कृतिक धरोहर में कोई योगदान नहीं था। उनके लिए, एक सच्चा भारतीय बनने का मतलब था हिंदू जीवनशैली से जुड़ा होना।

• Role of the State

Savarkar saw the state as a tool to promote Hindu values and protect the interests of the Hindu community. He argued that the government should work to protect the cultural and religious rights of Hindus and make sure that Hinduism remained the central guiding force of the nation.

राज्य की भूमिका

सावरकर ने राज्य को हिंदू मूल्यों को बढ़ावा देने और हिंदू समुदाय के हितों की रक्षा करने के एक साधन के रूप में देखा। उनका कहना था कि सरकार को हिंदू संस्कृति और धार्मिक अधिकारों की रक्षा करने का काम करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हिंदू धर्म राष्ट्र की केंद्रीय मार्गदर्शक शक्ति बना रहे।

Examine Jyotiba Phule's ideas on social revolution.

सामाजिक क्रांति पर ज्योतिबा फूले के विचारों का परीक्षण कीजिए।

1. Criticism of the Caste System

Jyotiba Phule strongly criticized the caste system, which he saw as oppressive and unjust. He believed that it denied lower-caste people their basic rights and dignity. Phule argued that the caste system was created by the upper castes to maintain their power over the lower ones.

जाति व्यवस्था की आलोचना

ज्योतिबा फूले ने जाति व्यवस्था की कड़ी आलोचना की, जिसे उन्होंने अन्यायपूर्ण और अत्याचारी माना। उनका मानना था कि यह निचली जातियों से उनकी बुनियादी अधिकारों और गरिमा को छीनता है। फूले ने कहा कि जाति व्यवस्था उच्च जातियों द्वारा अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए बनाई गई थी।

2. Emphasis on Education

Phule believed that education was the key to social change. He focused on educating girls, women, and people from lower castes, as he felt that they were denied opportunities. He opened the first school for girls in Pune in 1848 to promote education for all.

शिक्षा पर जोर

फूले का मानना था कि सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। उन्होंने लड़कियों, महिलाओं, और निचली जातियों के लोगों को शिक्षा देने पर जोर दिया, क्योंकि उन्हें अवसरों से वंचित किया जाता था। 1848 में पुणे में उन्होंने लड़कियों के लिए पहला स्कूल खोला ताकि सभी के लिए शिक्षा का प्रचार किया जा सके।

3. Opposition to Religious Orthodoxy

Phule was against religious practices that justified inequality, especially those used by Brahmins to maintain their social dominance. He criticized religious texts that perpetuated caste-based discrimination and argued for a society based on equality and justice.

धार्मिक रूढ़िवादिता का विरोध

फूले उन धार्मिक प्रथाओं के खिलाफ थे जो असमानता को उचित ठहराती थीं, खासकर उन प्रथाओं का विरोध किया, जिन्हें ब्राह्मणों ने अपनी सामाजिक प्रभुत्व बनाए रखने के लिए अपनाया था। उन्होंने उन धार्मिक ग्रंथों की आलोचना की जो जातिवाद को बढ़ावा देते थे और समानता और न्याय पर आधारित समाज का समर्थन किया।

4. Role of Women in Society

Phule was a strong advocate for women's rights. He believed that the social revolution would not succeed without the upliftment of women. He fought for women's education, property rights, and their equal participation in society.

समाज में महिलाओं की भूमिका

फूले महिला अधिकारों के एक मजबूत समर्थक थे। उनका मानना था कि सामाजिक क्रांति महिलाओं के उत्थान के बिना सफल नहीं हो सकती। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, संपत्ति के अधिकारों और समाज में समान भागीदारी के लिए संघर्ष किया।

5. Critique of Brahminical Hegemony

Phule believed that Brahmins were the primary force behind the social inequality in India. He accused them of exploiting the lower castes and maintaining their power through the religious and social system. His writings, such as *Gulamgiri*, exposed the exploitation and called for a complete social overhaul.

ब्राह्मणवाद की आलोचना

फूले का मानना था कि भारत में सामाजिक असमानता के पीछे मुख्य रूप से ब्राह्मणों का हाथ था। उन्होंने ब्राह्मणों पर निचली जातियों का शोषण करने और धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था के माध्यम से अपनी सत्ता बनाए रखने का आरोप लगाया। उनकी रचनाओं, जैसे *गुलामगीरी*, में इस शोषण का पर्दाफाश किया गया और पूरी सामाजिक संरचना के पुनर्निर्माण की बात की गई।

Discuss the salient features of Swami Vivekanandas theory of social change.

स्वामी दयानंद सरस्वती के धार्मिक और राजनीतिक विचारों का परीक्षण कीजिए।

1. Emphasis on Spirituality and Self-Realization

Vivekananda believed that the true source of social change lay in the spiritual awakening of individuals. He advocated for self-realization, where individuals understand their divine potential. By realizing the divinity within, people could rise above materialism and ego, leading to social harmony and progress.

आध्यात्मिकता और आत्म-साक्षात्कार पर जोर

विवेकानंद का मानना था कि सामाजिक परिवर्तन का असली स्रोत व्यक्तियों का आध्यात्मिक जागरण था। उन्होंने आत्म-साक्षात्कार का समर्थन किया, जिसमें व्यक्ति अपनी दिव्यता को समझता है। अपनी अंदर की दिव्यता को समझकर, लोग भौतिकवाद और अहंकार से ऊपर उठ सकते थे, जो सामाजिक सद्भाव और प्रगति की ओर ले जाता है।

2. Focus on Service to Humanity

According to Vivekananda, serving humanity was the highest form of worship. He believed that social change could be achieved by helping the poor, the marginalized, and those suffering from social injustices. He emphasized the idea of "Man is God" and encouraged people to see God in all beings, especially the downtrodden.

मानवता की सेवा पर ध्यान

विवेकानंद के अनुसार, मानवता की सेवा सबसे उच्चतम रूप में पूजा है। उनका मानना था कि सामाजिक परिवर्तन गरीबों, हाशिए पर रहने वालों और समाजिक अन्यायों से पीड़ित लोगों की मदद करके प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने "मनुष्य ही भगवान है" का विचार प्रस्तुत किया और लोगों से कहा कि वे सभी प्राणियों में, विशेष रूप से निम्न वर्ग के लोगों में, भगवान को देखें।

3. Empowerment of the Youth

Swami Vivekananda believed that the youth played a pivotal role in social change. He encouraged the youth to take an active role in nation-building, stressing that they should be strong, confident, and spiritually awakened to bring about meaningful change in society.

युवाओं का सशक्तिकरण

स्वामी विवेकानंद का मानना था कि युवा सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने युवाओं को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया, यह कहते हुए कि उन्हें मजबूत, आत्मविश्वासी और आध्यात्मिक रूप से जागृत होना चाहिए, ताकि वे समाज में वास्तविक परिवर्तन ला सकें।

4. Social Equality and Removal of Caste Discrimination

Vivekananda was a strong advocate for social equality. He strongly opposed the caste system and untouchability. He believed that all humans, regardless of their caste, were equal in the eyes of God. He called for the removal of social barriers and the upliftment of the lower castes, particularly through education and social reforms.

सामाजिक समानता और जातिवाद का उन्मूलन

विवेकानंद सामाजिक समानता के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने जातिवाद और अछूतता का कड़ा विरोध किया। उनका मानना था कि सभी मनुष्य, चाहे उनकी जाति जो भी हो, भगवान की नजरों में समान हैं। उन्होंने सामाजिक बाधाओं को समाप्त करने और विशेष रूप से शिक्षा और सामाजिक सुधारों के माध्यम से निचली जातियों का उत्थान करने की बात की।

5. Unity of All Religions

Vivekananda believed in the unity of all religions, promoting a universal approach to spirituality. He argued that all religions, despite their external differences, ultimately lead to the same truth. By embracing this idea of religious unity, he believed society could overcome religious divisions and create a more harmonious and inclusive social structure.

सभी धर्मों की एकता

विवेकानंद का मानना था कि सभी धर्मों की एकता होनी चाहिए और उन्होंने आध्यात्मिकता के लिए एक सार्वभौमिक दृष्टिकोण का प्रचार किया। उनका कहना था कि सभी धर्म, भले ही उनके बाहरी रूप अलग हों, अंततः एक ही सत्य की ओर ले जाते हैं। धार्मिक एकता के इस विचार को अपनाकर, उन्होंने विश्वास किया कि समाज धार्मिक विभाजन को पार कर सकता है और एक अधिक सामंजस्यपूर्ण और समावेशी सामाजिक संरचना बना सकता है।